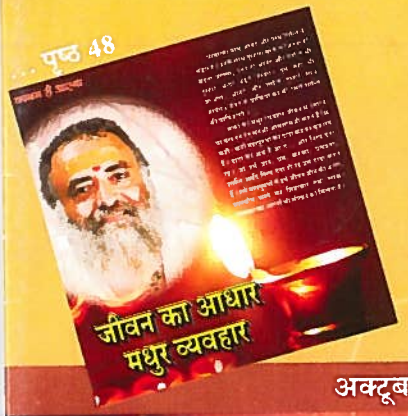

मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के ग्रामों में सर्वाधिक प्रसारित मासिक पत्रिका

ग्राम संस्कृति

कृषि मूलम् जगत सर्वम्

अक्टूबर 2009, विक्रम संवत् 2066 आश्विन/कार्तिक मास ✦ मूल्य रु. 25

भारत में ड्रिप इरिगेशन के जनक
भंवरलाल जैन 'भाऊ साहब'

–प्रकाश बियाणी

समूह का सालाना कारोबार तो आगामी सालों में एक बिलियन डॉलर (लगभग 4500 करोड़ रुपए) हो जाएगा, लेकिन मेरे लिए अब इससे ज्यादा महत्वपूर्ण है – जैन इरिगेशन को भारतीय सोच वाला वैश्विक समूह बनाना ताकि दुनिया को जब अलविदा कहें तो यह संतोष हो कि हमने नई पीढ़ी को पहले से बेहतर दुनिया सौंपी।

– भंवरलाल जैन,
संस्थापक चेअरमैन, जैन इरिगेशन समूह

कामयाबी के शिखर पर पहुंचने के लिए चाहिए जमीनी सूझबूझ और असीम धैर्य। कामयाबी कड़ी परीक्षा लेती है। जो लोग मजबूती से कदमताल करते हुए शिखर पर पहुंचते हैं, वे ही इस परीक्षा में सफल होते हैं और कामयाबी के पिरामिड पर लंबी पारी खेलते हैं।

महाराष्ट्र के एक साधारण शहर जलगांव के भंवरलाल जैन ऐसे ही फर्स्ट-जनरेशन उद्यमी हैं। सन् 1963 में स्थापित जैन इरिगेशन को उन्होंने अपनी सूझबूझ और एकाग्रचित्तता के बलबूते देश का प्रतिष्ठित औद्योगिक साम्राज्य बनाया।

90 के दशक में वे कामयाबी का शिखर छूने की तैयारी कर रहे थे कि परीक्षा का दौर शुरू हुआ। विस्तारीकरण की लालसा में जैन इरिगेशन कर्ज के चक्रव्यूह में ऐसा फंसा कि सन् 1996 में कंपनी के शेयर मूल्य 460 रु. से घटकर मात्र 9 रु. रह गए। उन्हीं दिनों भंवरलाल जैन को हृदयाघात हुआ। मीडिया ने कयास लगाना शुरू कर दिया कि उनकी कारोबारी पारी समाप्त हो गई। पर भंवरलाल जैन राजस्थानी वैश्य हैं, जिन्हें मां की कोख से व्यापार संचालन के संस्कार मिलते हैं। पांच हृदयाघात, दो बायपास सर्जरी, एक एंजियोप्लास्टी तथा पेसमेकर का बड़ा भाई एआईसीडी ने भंवरलाल जैन को नहीं थकाया, न ही डराया। जैन इरिगेशन की खोयी प्रतिष्ठा पुन: प्राप्त करने तक उन्होंने विराम नहीं लिया। आज जैन इरिगेशन दर्जनभर कंपनियों (डिवीजन) का वन-स्टॉप हाई-टेक एग्री समूह है, जिसने प्लास्टिक, एग्रीकल्चर व फूड उद्योग में 550 मिलियन डॉलर (2216 करोड़ रुपए, वित्त वर्ष 2007-08) का टर्नओवर दर्ज किया है। अब भंवरलाल जैन ने अपनी भूमिका 'गुरु-गाइड' तक सीमित कर ली है, पर आज भी 12 घंटे व्यस्त रहते हैं। उनके चार पुत्र समूह की दैनंदिनी जवाबदारी संभाले हुए हैं। बड़े पुत्र अशोक जैन समूह के वाइस चेअरमैन हैं। अनिल जैन मैनेजिंग डायरेक्टर, अजित जैन ज्वाइंट मैनेजिंग डायरेक्टर तथा सबसे छोटे पुत्र अतुल जैन विदेशी कारोबार की देखरेख करते हैं।

भंवरलाल जैन के पुरखे रोजगार की तलाश में सन् 1887 में राजस्थान से जलगांव आए थे। विश्वप्रसिद्ध अजंता गुफा के नजदीक एक छोटा-सा गांव वडाली वाकोट उन्हें रास आया। वे यहां कपास व सब्जी की खेती करने लगे। सन् 1937 में जन्में भंवरलाल ने जलगांव में स्कूली शिक्षा और पोत्दार कॉलेज, मुंबई से कॉमर्स व विधि स्नातक की डिग्री प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने एमपीएससी की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली तो उन्हें राजपत्रित अधिकारी की नौकरी मिल गई। पर वैश्य संस्कारों ने उन्हें गजेटेड अफसर नहीं बनने दिया। युवा भंवरलाल ने अपना कारोबार शुरू करने का मन बनाया तो वैश्य परिवार ने जोखिम उठाकर तीन पीढ़ियों की सारी पुश्तैनी बचत उन्हें सौंप दी। भंवरलाल ने 7 हजार रुपए की इस पूंजी से एक बैलगाड़ी और घासलेट के ड्रम्स खरीदे। वे गांव-गांव भटके। घासलेट बेचकर थोड़ा पैसा कमाया तो सलीके का कारोबार करने की मंशा से परिवार के सदस्यों के साथ एक ट्रेडिंग स्थापित की- 'जैन ब्रदर्स'। जैन बंधुओं ने एस्कॉर्ट ट्रेक्टर्स व राजदूत मोटर साइकिल की डीलरशिप भी ले ली। कृषि उपकरण, बीज, खाद, पेस्टीसाइड्स के अलावा गरवारे के पीवीसी पाइप्स किसानों को बेचे। भंवरलाल जैन ट्रेडिंग से अच्छा पैसा कमाने लगे, पर उन्हें दूसरों के उत्पाद को प्रमोट करना रास नहीं आया। उन्होंने मैन्यूफेक्चरिंग सेक्टर में प्रवेश करने की योजना बनाई और 30 लाख रुपए में एक रुग्ण 'बनाना पावडर संयंत्र' खरीदा। हालांकि, तब उनके पास सरप्लस पूंजी थी - मात्र 2 लाख रुपए। इस संयंत्र से उन्होंने पपीते के दूध से 'पपेन' बनाना शुरू किया और उसे अमेरिका जैसे देश को निर्यात किया। हालांकि, जैन इरिगेशन ने अब यह व्यवसाय समेट लिया है, पर 80 के दशक में भंवरलाल जैन पश्चिम के देशों को रिफाइंड पपेन सप्लाई करने वाले दुनिया के सबसे बड़े उद्योगपति बन गए थे। इस सफलता ने पहली बार जलगांव को विश्व मानचित्र पर पहुंचाया तो भंवरलाल जैन का कद इतना बड़ा हो गया कि महाराष्ट्र के किसान उन्हें 'भाऊ साहब' के आत्मीय संबोधन से पुकारने लगे।

भाऊ साहब ने पाया कि भारत में भारी मात्रा में फल-सब्जी (लगभग 11 करोड़ टन) पैदा होते हैं, पर इसका मात्र 2 फीसदी हिस्सा ही वेल्यू-एडेड प्रोडक्ट्स में बदला जा रहा है, जबकि दुनिया में इनकी भारी मांग है। इस कारोबार में उन्हें संभावनाएं दिखीं तो न्यू जनरेशन स्टेट-ऑफ-द-आर्ट संयंत्रों व वर्ल्ड क्लास पैकेजिंग व परिवहन साधनों के साथ फल-सब्जी प्रोसेसिंग उद्योग में प्रवेश किया। जैन इरिगेशन का यह निर्यात कारोबार आज इतना विशाल हो गया है कि कच्चे माल के लिए जैन इरिगेशन जहां जलगांव स्थित 1000 एकड़ के जैन एग्री पार्क में खुद खेती कर रहा है, वहीं 7000 से ज्यादा किसानों से फल-सब्जी की कांट्रेक्ट फार्मिंग करवा रहा है। जैन इरिगेशन डिहाइड्रेट प्याज, सब्जियां, फल आदि को फार्म-फ्रेश के नाम से अमेरिका, इंग्लैंड, कनाडा, जापान, जर्मनी, स्वीडन जैसे 60 देशों को निर्यात करता है। दुनिया की बहुर्राष्ट्रीय कंपनियां जैसे कोका कोला, नेस्ले, कारगिल 'फार्म फ्रेश' से बनी डिशेज सारी दुनिया में सर्व कर रही हैं। इस कारोबार ने जलगांव क्षेत्र के हजारों किसानों को 'मिलेनियर' बनाया है। जैन इरिगेशन की इन किसानों को एक और सौगात है- केला फसल के रोगमुक्त मदर प्लांट, जिन्हें जैन इरिगेशन के कृषि वैज्ञानिक ने जैन एग्री पार्क में विकसित किया है। इसने केले का उत्पादन 50 से 100 फीसदी बढ़ाया है तो उत्पादन अवधि 18 माह से घटाकर 10 से 11 माह कर दी है।

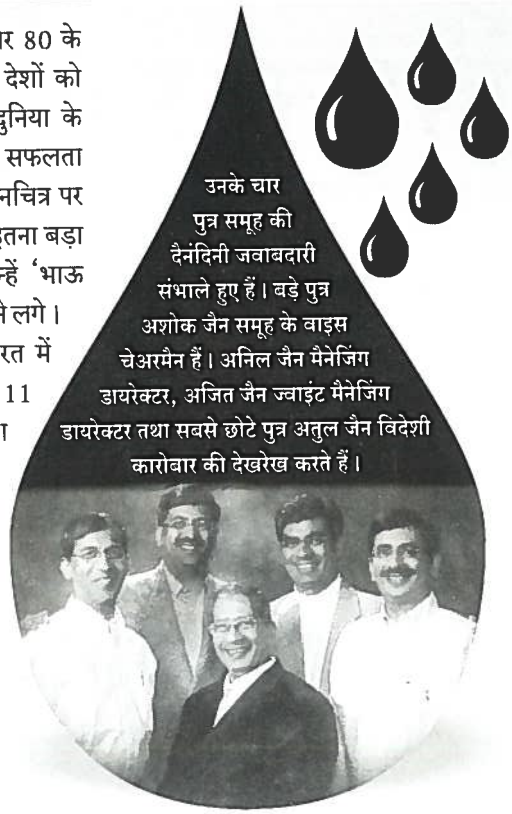
उनके चार पुत्र समूह की दैनंदिनी जवाबदारी संभाले हुए हैं। बड़े पुत्र अशोक जैन समूह के वाइस चेअरमैन हैं। अनिल जैन मैनेजिंग डायरेक्टर, अजित जैन ज्वाइंट मैनेजिंग डायरेक्टर तथा सबसे छोटे पुत्र अतुल जैन विदेशी कारोबार की देखरेख करते हैं।

हमारे देश में माइक्रो इरिगेशन सिस्टम का पॉयोनियर जैन समूह दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा (प्रथम क्रम पर इजराइल की नेटाफिम) ड्रिप इरिगेशन निर्माता है। यह ऐसी सिंचाई पद्धति है, जो खेती में पानी और खाद का उपयोग न्यूनतम करती है, क्योंकि इसके जरिए खेती के ये दोनों अनिवार्य तत्व सीधे पौधों की जड़ों तक पहुंचते हैं। इसके लिए वॉल्व्स, पाइप्स, ट्यूबिंग और एमिटर्स का उपयोग किया जाता है। ड्रिप इरिगेशन ने 25 लाख से अधिक एकड़ बंजर भूमि को उपजाऊ कृषि भूमि में बदला है। 2.11 हेक्टेयर भूमि पर ड्रिप इरिगेशन पद्धति से सिंचाई की लागत करीब 34 हजार रुपए आती है, जो 135 क्विंटल उत्पादन बढ़ा देती है। सन् 1997 में इरिगेशन यूएसए ने भाऊ साहब को 'क्राफोर्ड रेड मेमोरियल' अवार्ड प्रदान किया। यह अवार्ड उन्हें उपयुक्त इरिगेशन तकनीक प्रमोट करने और

अशोक जैन

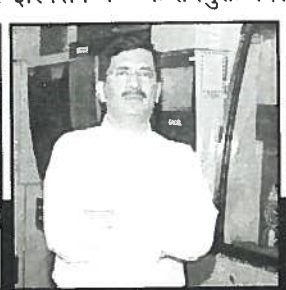
अनिल जैन

उसे अमेरिका के बाहर इरिगेश उद्योग में अपनाने के लिए मिला। भाऊ साहब दूसरे एशियन और पहले भारतीय हैल, जिन्हें यह अवार्ड मिला है।

जैन इरिगेशन समूह टिश्यू कल्चर बनाना (केला) प्लांट्स का सबसे बड़ा समूह है तथा भारत में सर्वाधिक फल और सब्जियों का सबसे बड़ा प्रोसेसिंग उद्योग समूह भी। यह समूह संगठित क्षेत्र में देश का सबसे बड़ा मेंगो (आम) पल्प प्रोसेसर भी है। अनुमान लगाया जाता है कि दुनिया में इस क्षेत्र में इसका तीसरा क्रम है। प्याज और सब्जी की कांट्रेक्ट फार्मिंग में भी जैन समूह ने किसानों को भागीदार बनाया है। समूह के फूड प्रोसेसिंग प्लांट्स के लिए ये किसान अनुबंधित मूल्य पर कांट्रेक्ट फार्मिंग करते हैं। समूह उन्हें तकनीक प्रदान करता है और बैंकों से कर्ज दिलवाने में भी मदद करता है।

जैन इरिगेशन समूह भारत में सर्वाधिक प्लास्टिक पाइप्स बना रहा है। यह एक छत के नीचे सबसे ज्यादा प्लास्टिक शीट्स (पीसी एंड पीवीसी) बनाता है, जो लकड़ी का बेहतर विकल्प होने से जंगलों की कटाई घटाते हैं अर्थात पर्यावरण हितैषी हैं। जैन समूह को वैज्ञानिक खेती बढ़ाने के लिए 130 से ज्यादा नेशनल व इंटरनेशनल अवार्ड् मिले हैं। भारत में जैन इरिगेशन के 70 कार्यालय, 38 डिपो, 10 प्लांट्स और 1600 डीलर्स हैं। विदेशों में 13 प्लांट्स, 21 कार्यालय, 1000 डिस्ट्रिब्यूटर्स और डीलर्स हैं। जैन इरिगेशन समूह ने पिछले 3 सालों में दुनिया में 10 से ज्यादा कंपनियों को अधिग्रहित किया है।

किसान हितैषी भाऊ साहब

जलगांव स्थित जैन एग्री पार्क हरित क्रांति की झलक दिखाता है और यह उदाहरण प्रस्तुत करता है कि यदि भारतीय किसान तकनीक आधारित मॉडर्न खेती करें तो भारत सही मायने में सुपर पॉवर बन जाए। भंवरलाल जैन 'भाऊ साहब' ने भारत को पुन: समृद्ध बनाने की इस बानगी को मूर्त रूप देने के लिए जैन इरिगेशन को कैसे तैयार किया है, यह जानना प्रेरक है तो दिलचस्प भी....

-जैन इरिगेशन का माइक्रो इरिगेशन डिवीजन प्रीसिसन इरिगेशन प्रोडक्ट्स की संपूर्ण श्रृंखला बनाता है। किसानों को यह डिवीजन मॉडर्न खेती के लिए तैयार करने हेतु हर तरह की मदद करता है। इसके लिए जैन पार्क में 1000 एकड़ का हाई-टेक एग्रो इंस्टीट्यूट स्थापित किया गया है। यहां फार्मिंग शोध-अनुसंधान, डिमांस्ट्रेशन और ट्रेनिंग दी जाती है और टर्न-की प्रोजेक्ट्स पूरे किए जाते हैं। यहां 500 से ज्यादा कृषि और सिंचाई वैज्ञानिक, टेक्नोक्रेट्स और टेक्नोलॉजिस्ट कार्यरत हैं।

-जैन इरिगेशन देश का सबसे बड़ा प्लास्टिक पाइप उत्पादक समूह है। यह हर किस्म के पाइप्स और फिटिंग्स बनाता है। जैन इरिगेशन के स्क्रीन और केसिंग पाइप्स यूरोपियन देशों को निर्यात किए जाते हैं। तो पीवीसी और पीई पाइप्स भारतीय किसानों तक पहुंचते हैं, जो जल आपूर्ति (परिवहन), कंस्ट्रक्शन कार्य, डक्टिंग, गैस परिवहन और सिंचाई के लिए उपयुक्त हैं। टेलीकॉम सेक्टर में डक्टिंग कार्य के लिए एयरटेल, रिलायंस कम्युनिकेशंस, टाटा टेलीसर्विसेज, वोडाफोन, एस्सार और बीएसएनएल जैसी बड़ी कंपनियां इन पर निर्भर हैं।

-जैन इरिगेशन का टिश्यू कल्चर डिवीजन उन्नत 'बनाना (केला) प्लांट्स' विकसित करता है। इसके लिए जैन एग्री पार्क में स्वतंत्र आरएंडडी और बायोटेक लेब स्थापित की गई है।

-जैन इरिगेशन कृषि और फ्रूट प्रोसेसिंग वेस्ट को ऑर्गेनिक इनपुट्स में बदलता है।

-एग्रो प्रोसेस्ड प्रोडक्ट्स डिवीजन फलों को शोरबे, कांसेंट्रेट्स, जूस और आईक्यूएफ उत्पादों को बनाने के लिए प्रोसेस करता है। यहां प्याज और सब्जियों की सेल्फ लाइफ बढ़ाने के लिए उन्हें वैज्ञानिक पद्धति से डिहाइड्रेट किया जाता है। स्प्रे ड्राईंग इकाई फलों के शोरबे को पावडर में तब्दील कर देती है। इतना वैज्ञानिक व उन्नत एग्रो प्रोसेस्ड डिवीजन भारत में अकेला है, जिसने भारतीय किसानों के फल और सब्जी को वेल्यू-एडेड प्रोडक्ट्स में बदलने की मिसाल कायम की है।

-जैन इरिगेशन पीवीसी शीट्स भी बनाता है, जो जंगलों और वृक्षों की कटाई रोकते हैं। ये शीट्स लकड़ी का बेहतर विकल्प हैं।

-जैन इरिगेशन सोलर वाटर हीटिंग और लाइटिंग सिस्टम (सौर ऊर्जा से चलने वाले प्रोडक्ट) बनाता है। जैन ज्योति लालटेन, जैन-ज्योत होम लाइटिंग सिस्टम और जैन ज्योत स्ट्रीट लाइटिंग सिस्टम बिजली संकट का शानदार गैर परंपरागत ऊर्जा स्रोत है।

अजित जैन

अतुल जैन